चत्त वृत्ति तथा चत्त नदी का प्रवाह अंतर्मुखी बहिर्मुखी

मीनाक्षी जोशी

शोधच्छात्रा

संस्कृत अध्ययन वाला , वक्रम वश्व वद्यालय उज्जैन

जैसा क पूर्व में कहा जा चुका है चत्त जड़ है और पुरुष चेतन है । अनादि वद्या के कारण पुरुष और प्रकृति में परस्पर एक प्रकार का अभेद संबंध हो जाता है। इससे बु द्ध की वृत्तियां जो वषयाकार होती है उनका पुरुष में आरोप हो जाता है और "मैं शांत हूं, मैं दुखी हूं" इस प्रकार का ज्ञान पुरुष में उदित होने लगता है। बु द्ध की जो वषयाकार वृत्तियां पुरुष में प्रतिबिंबित होती है वही पुरुष की वृत्तियां कहीजाती है। पुरुष का प्रतिबिंब चत्त पर पड़ता है उससे चत्त भी अपने को चेतन समझने लगता है और चेतन की तरह कार्य करने लगता है। यही चत्त की वृत्ति है। इस प्रकार दोनों में परस्पर आरोप होता है **(**दृष्टव्य योगवार्तिक सूत्र **1** से **4)** दूसरे शब्दों में कहा जाए तो चत्त का कसी व शष्ट प्रकार से रहना ही वृत्ति कहा जाता है। पुरुष निसर्ग तथा शुद्ध चैतन्य तथा शरीर मन के बंधनों से स्वतंत्र है परंतु पुरुष के प्रतिबिंबित होने पर चत्त चेतन के समान प्रतीत होता है। पदार्थ के साथ संबंध होने पर उस वस्तु के रूप को ग्रहण कर लेता है। पुरुष को पदार्थ के स्वरूप का ज्ञान चत्त के परिवर्तनों के कारण ही होता है जिन्हें वृत्तियाँ कहा जाता है। जिस प्रकार नदी की लहरों में प्रतिबिंबित चंद्रमा फर होने पर भी चलायमान प्रतीत होता है उसी प्रकार परिणाम शील चत्त में प्रतिबिंबित स्वत: परिणामी पुरुष परिवर्तनशील मालूम होता है।

यह अज्ञान के कारण होता है। धर्म अधर्म तथा वासनाओं की उत्पत्ति के कारण होने पर यह वृत्तियाँ क्लेश देती है और क्लिष्ट कहलाती है ।जब यह ख्याति

अर्थात रजस् तमस् से रहित बु द्ध सत्व की प्रशांतवाहिनीप्रज्ञा को देने वाली होती है तब यह वृत्तियाँ अक्लिष्ट कहलाती है ।वृत्तियाँ पांच प्रकार की होती है-

"वृत्तयः पञ्चतय्यः क्लिष्टाSक्लिष्टाः।" योगसूत्र १/५

"प्रमाण वपर्यय वकल्पनिद्रास्मृतयः।" योगसूत्र १/६

वाचस्पति मश्र वृत्ति को एक अवयवी के रूप में मानते हैं जिसके 5 अवयव प्रमाण आदि हैं। **(** दे खए योग सूत्र तत्ववैशारदी १/५**)** ।

यह वृत्तियाँ इस प्रकार है -

१. प्रमाण वृत्ति-

प्रमाण अर्थात सत्य ज्ञान। प्रमाण का लक्षण सूत्रकार एवं भाष्यकार दोनों में ही नहीं दिया है। वाचस्पति मश्र प्रमा के साधन को प्रमाण मानते हुए उसे और उसे पौरुषेयव्यवहार का हेतु मानते हैं। सूत्रकार ने प्रमाणों की संख्या तीन मानी है-

"प्रत्यक्षानुमानागमाः प्रमाणानि" योगसूत्र१/७

(क**)** प्रत्यक्ष प्रमाण- इंद्रियों के माध्यम से चत्त और सामान्य या वशेष रूप से लौ कक पदार्थों का संबंध होने पर तद् वषयक निश्शेष स्वरूप की अवधारणा जिस वृत्ति में होती है उसे प्रत्यक्ष प्रमाण कहते हैं। अर्थात चत्त का इंद्रियों के माध्यम से बाह्य वस्तु के साथ संपर्क होने पर पदार्थ के वशेष स्वरुप को निश्चित कराने वाला प्रमाण प्रत्यक्ष कहा गया है। वज्ञान भक्षु योगवार्तिक में स्पष्टीकरण देते हैं क चत्त अकेला ही वषयाकाराकारित नहीं होता वरन् इंद्रिय सहित तदाकाराकारित होता है।

(ख**)** अनुमान प्रमाण- लंग के द्वारा जो साध्य का ज्ञान होता है वह अनुमान प्रमाण पर आधारित होता है। आचार्य व्यास कहते हैं अनुमेय सजातियों में रहने वाला वजातियों में न रहने वाला जो संबंध है तन्मूलक और सामान्य अंश का मुख्य रूप से ग्रहण करने वाली चत्तवृत्ति अनुमान कहलाती है।

कभी कभी कसी वस्तु से इंद्रिय द्वारा अथवा योगज समा ध द्वारा संबंध न होने पर भी प्रत्यक्ष की जाती हुई वस्तु के साथ नियत सहचार संबंध शास्त्रीय शब्दों में जिसे व्याप्ति कहते हैं, उसी के आधार पर यह व शष्ट ज्ञान होता है। ऐसे ज्ञान को अनु मति तथा उसके करण को अनुमान कहते हैं।

(ग) आगम प्रमाण- आप्त व्यक्ति के द्वारा अथवा अनु मत पदार्थ का दूसरे के बोध हेतु शब्द द्वारा उपदिष्ट करने पर उस शब्द के द्वारा श्रोता की शब्दों के अर्थ वषयक जो वृत्ति बनती है उसे आगम प्रमाण वृत्ति कहते हैं। कसी भी वक्ता के प्रत्येक कथन से होने वाले शाब्दबोध को आगम प्रमाण की कोटि में नहीं रखा जा सकता। भाष्यकार व्यास स्पष्ट करते हैं "जिसका वक्ता और अश्रद्धेय हो अर्थात् जिसने स्वयं प्रत्यक्ष या अनुमान के आधार पर वचन न कहे हो वह आगम प्रमाण नहीं माना जा सकता क्यों क उसकी बात सत्यता से रहित होगी अथवा अप्रमा णक होगी।"

" यस्याश्रद्धेयार्थो वक्ता न द्रष्टानु मतार्थः, स आगम प्लवते।" व्यासभाष्य

यदि मूल वक्ता दृष्ट अथवा अनु मत पदार्थ का बोध करवाता है तो वह नि र्वप्लव आगम प्रमाण होगा । शास्त्रों के अध्ययन तथा गुरु आदि आप्तजनों के उपदेश से होने वाले बोध को शाब्दबोध तथा इस बोधक प्रमाण को आगम या शब्द प्रमाण कहते हैं।मूल- वक्ता से तात्पर्य वाचस्पति मश्र ईश्वर को मानते हैं।

२. वपर्यय वृत्ति-

वषयों के संबंध में मथ्या ज्ञान को ही वपर्यय कहते हैं। संशय भी इसी के अंतर्गत आ जाता है । यह पदार्थ से भन्न रूप से प्रतिष्ठित होने वाली चत्त की वृत्ति वपर्यय कहलाती है -

" वपर्ययो मथ्याज्ञानमतद्रूपप्रतिष्ठितम्" यो.सू.१/८

अर्थात यह पदार्थ की वास्त वक स्वरूप का बोध नहीं कराती यह प्रमाण के द्वारा बा धत हो जाती है। यथा नेत्र दोष के कारण एक चंद्रमा के स्थान पर दो चंद्रमा का

दिखाई देना वपर्यय वृत्ति है। क्यों क यह एक चंद्र वषयक यथार्थ ज्ञान के द्वारा बा धत हो जाती है। इस प्रकार इस का दूसरा नाम वद्या है। अ वद्या से ही अस्मिता राग देश और अ भनिवेश की उत्पत्ति होती है। अतः इन्हें भी वपर्यय के अंतर्गत ही परिग णत कया जाता है।

३. वकल्पवृत्ति-

"शब्दज्ञानानुपाती वस्तुशून्यो वकल्पः" यो.सू. १/९

शब्दों और अर्थों का संबंध एक प्रकार से नित्य संबंध ही रहता है। क्यों क शब्दों के बिना हम कसी वस्तु की कल्पना नहीं कर पाते। कभी-कभी दो या अ धक शब्दों का इस भाँति प्रयोग कर लया जाता है क उनके स्वतंत्र अर्थ होते हुए भी उन संयुक्त पदों का कोई वस्तुभूत अर्थ नहीं बनता जैसे शशश्रृंग, आकाश कुसुम इत्यादि। इन शब्दों से अर्थबोध होते हैं परंतु उन बोधों के अनुरूप कोई वस्तु नहीं होती। वकल्प का अर्थ यही है क शब्दजनितवृत्ति जिसका लगाव वस्तुस्थिति से नहीं हो अर्थात शब्द ज्ञान से उत्पन्न निर्वस्तुक जो चत्त वृत्ति बनती है उसे वकल्प वृत्ति कहते हैं । जैसे "चैतन्य पुरुष का स्वरूप है " यह बोध रहने पर चैतन्य से भन्न रूप में पुरुष का वकल्प भाव से भन्न कोई अभाव पदार्थ नहीं है यह ज्ञान रहने पर भी पुरुष में भी सभी भावों का अभाव है देखा जाता है । वशेषण वशेष्यभावरूप वकल्प -राहु का सर इत्यादि वकल्प वृत्ति के उदाहरण है ।

उपर्युक्त सारी वृत्तियां सामान्यतः चत्त की जागृत अवस्था में ही हो सकती है कंतु वकल्प वृत्ति स्वप्न अवस्था में भी हुआ करती है।कभी-कभी स्वप्ना वस्था में इतर वृत्तियों की संभावना हो जाती है।

व्यास भाष्य में शंका उपस्थित की जाती है की शब्द पर आधारित होने के कारण आगम प्रमाण में इसका अंतर्भाव कया जा सकता है? इसका उत्तर देते हुए व्यास कहते हैं क ऐसा नहीं हो सकता क्यों क यह वस्तु शून्य होती है। द् वत्तीय

शंका वपर्यय में अंतर्भाव की जाती है जिसका समाधान देते हुए मह र्ष व्यास कहते हैं क्यों क शब्द ज्ञान के आधार पर इस वृत्ति के अनंतर व्यवहार देखा जाता है। अतः वपर्यय में इसका अंतर्भाव नहीं कया जा सकता वपर्यय वृत्ति के द्वारा जो व्यवहार होता है वह क्ष णक होता है जब क वकल्प वृत्ति द्वारा हुए बोध का बाध नहीं होता।

४.निद्रा वृत्ति-

"अभावप्रत्ययालम्बना वृत्तिर्निद्रा" यो. सू.१/१०

तम के आ धक्य पर अवलंबित होने वाली वृत्ति निद्रा है। जागृत और स्वप्न अवस्था में होने वाली वृत्तियों के अभाव के कारण स्वरूप तमोगुण को आलंबन करने वाले वृत्ति निद्रा कही जाती है निद्रा में अभावप्रत्यक्षों का ही आलंबन रहता है इस वृत्ति में भी सत्त्व की कं चत अ धकता होने पर "मैं सुखपूर्वक सोया" इत्यादि बोध जागने पर होता है इसी प्रकार रजोगुण का कं चत उद्रेक होने पर "मैं सुख पूर्वक दुखपूर्वक सोया" तथा तम की प्रधानता होने पर "मैं ऐसी प्रगाढ़ निद्रा में सोया क कुछ भी बोध न रहा" इत्यादि का स्मरण हुआ करता है। निद्रा वृत्ति का लक्षण देते हुए सूत्रकार वृत्ति पद का प्रयोग कया है- अभावप्रत्ययालम्बनावृत्तिः निद्रा वृत्ति पद की अनुवृत्ति होने के बाद भी ऐसा कहने का उद्देश्य यह है क नैयायिकों आदि जिन्होंने निद्रा को वृत्ति नहीं माना उसका खंडन करते हुए अपने मत को पुष्ट करना है।

निद्रा और समा ध में भेद

निद्रा वृ द्ध तथा समा ध में भेद यह है क समा ध में वृत्तियों का पूर्ण अभाव हो जाता है जब क निद्रा से उठने पर व्यक्ति को उस काल में अनुभूत अनुभव के आधार पर स्मृति होती है क मैं सुख पूर्वक सोया दुख पूर्वक सोया। समा ध से यहां तात्पर्य असंप्रज्ञात अवस्था है।

५. स्मृतिवृत्ति

स्मृति नामक यह वृत्ति प्रमाण आदि के अनुभव के आधार पर होती है। अतः इसके पश्चात् ही उल्लेख है। इसका लक्षण सूत्र कार देते हुए कहते हैं -

"अनुभूत वषयासम्प्रमोषः स्मृतिः" यो. सू.१/११

अतीत अनुभवों की यथा वत मान सक प्रतीति स्मृति है। स्मृति वृत्ति की स्थिति में पूर्व काल में अनुभूत वषयों का कालांतर में बोध होता है। स्मृति वृत्ति में सत्व रज और तम में से कसी की भी अ धकता हो सकती है। पूर्व अनुभूत वषय के असम्प्रमोष को स्मृति कहा जाता है। यहां प्रयुक्त असम्प्रमोषः पद की व्याख्या करते हुए वाचस्पति मश्र लखते हैं क सामान्य जो प्रमाण आदि वृत्ति है वह अन धकृत पदार्थ को वषय करने वाली है परंतु स्मृति पूर्व अनुभूत पदार्थ को ही स्मरण करती है उससे अ धक नहीं। सूत्रकार द्वारा असम्प्रमोष प्रमुख पद के प्रयोग से ही प्रत्य भज्ञा की व्यावृत्ति हो जाती है। क्यों क प्रत्य भज्ञा में वर्तमान का लक ज्ञान भी रहता है जो स्मृति के लक्षण में प्रयुक्त इस पद को पूर्ण स्पष्ट जानने के बाद उसमें अंतर्निहित नहीं माना जा सकत। अतः वज्ञान भक्षु द्वारा कए गए परिष्कार और स्मृति के लक्षण की प्रत्यय वज्ञान में अति व्याप्ति का खंडन स्वत: हो जाता है।

स्मृति के भेद

स्मृति के दो भेद मानें गये हैं-

१) भा वतस्मर्तव्या- यह स्मृति वृत्ति स्वप्नका लक होती है "स्वप्ने भा वतस्मृतव्या:"

२) अभा वतस्मर्तव्या- वाचस्पति मश्र इसे यथार्थ वषयक मानते हैं जब क वज्ञान वश्व भा वत स्मृता व्यास ए वन अर्थात भ वष्य की सूचना देने वाली मानते हैं।

इस प्रकार यह पांच प्रकार की चत्तवृत्तियों का योगोपदिष्ट साधनों के द्वारा निरोध करते हुए साधक क्रमशः चत्त की उत्तरोत्तर भू मयों पर बढ़ता हुआ इनका

पूर्व निरोध कर चत्त के निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त होकर कैवल्य का लाभ करता है।

चत्त-नदी का प्रवाह

चत्त वृतियों के द्वारा ही हमें आंतरिक अनुभव होता है। जब चत्त वृत्तियां हमें संसार चक्र में खींच कर ले जाती हुई वासनाओं और उनकी पूर्तियों में लग जाती है तब हम उसे क्लिष्ट अर्थात क्लेश की ओर ले जाने वाली क्लेश युक्त कहते हैं। जब वह हमें मुक्ति की ओर ले जाती है तब उन्हें हम अक्लिष्ट कहते हैं। हम कसी भी दिशा में जाए संसार की ओर या मुक्ति की ओर चत्त वृत्तिया ही हमें काम देती है। यह कभी अच्छी होती हैं तो कभी बुरी जो वृत्तियां हमें अंततः मुक्ति की ओर ले जाएं उन्हें ही हम अच्छी वृत्ति मानते हैं। इससे हमें चत्त का एक महत्वपूर्ण लक्षण स्पष्ट होता है वह यह क कभी वह हमें अच्छी दिशा अर्थात मुक्ति और कभी बुरी दिशा अर्थात संसार की ओर ले जाता है । व्यास भाष्य के अनुसार वह एक ऐसी नदी है जो दोनों ओर से बहती है पाप की ओर तथा अच्छाई की ओर। प्रकृति की प्रयोजन बता क यह अपेक्षा है क मनुष्य में वह संसार और मुक्ति दोनों ही प्रवृत्तियां जगाती है। जो धारा कैवल्य की ओर ले जाने वाली है वह ववेक मार्ग की ओर झुकी हुई है वह कल्याण के लए बहती है। जो धारा संसार की ओर ले जाने के सामर्थ्य से युक्त होती है अ ववेक वषय की ओर झुकी रहती है और वह पाप को उत्पन्न करने वाली होती है। इन दोनों में से वैराग्य के द्वारा अ ववेक वषय वाली धारा सुखा दी जाती है। ववेक दर्शन के अभ्यास के द्वारा ववेक स्रोत उद्घाटित कया जाता है इस प्रकार चत्तवृत्ति का निरोध हो जाता है (दे खए योगसूत्र व्यास भाष्य सूत्र संख्या १/१२)

संदर्भ - ग्रंथसूची

पातंजल योग सूत्राणि पतंजलि मुनि तत्त्ववैशारदीयटीका सहित टी वाचस्पति श्री चौखंबा संस्कृत सीरीज ऑफिस वाराणसी

पातंजल योग सूत्राणि पतंजलि मुनि व्यासभाष्य योग वार्तिक सहित चौखंबा संस्कृत सीरीज ऑफिस वाराणसी

पातंजल योग प्रदीप स्वामी ओमानंद तीर्थ गीता प्रेस गोरखपुर संख्या 2053

नीतिशास्त्र-डॉ ब्रजगोपाल तिवारी पुस्तक भंडार पटना 1995

भारतीय दर्शन- वाचस्पति गैरोला, लोकभारती प्रकाशन ,1962

भारतीय दर्शन- उमेश मिश्र चौखम्बा प्रकाशन सीरीज वाराणसी

भारतीय दर्शन का इतिहास - डा. सुरेन्द्र नाथ गुप्त, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी , जयपुर 1972

****